लहर

विधान सिंह

इण्डिया कन्टीनेन्टेल, गुवाहाटी-1

गुवाहाटी विश्वविद्यालयबाट इतिहासमा स्नातकोत्तर डिग्री लिनु भएका विधान सिंह उत्तर-पूर्व भारतका एकजना प्रतिष्ठित लेखक एंव शोधार्थी हुनुहुन्छ। उहाँ नयाँ दिल्ली स्थित राष्ट्रिय संग्रहलायबाट *Museology* माथि प्रशिक्षण प्राप्त पनि हुनुहुन्छ। असमीया, अंग्रेजी, विष्णुप्रिया मणिपुरी, बंगला औ हिन्दी भाषाहरूमा एक समान दक्षताले साहित्य चर्चा गर्नु बाहेक विधान सिंहले आकाशवाणी केन्द्रहरूमा नियमितरूपले उत्तर-पूर्वाञ्चलका विभिन्न जाति-जनजातिका लोक-संस्कृति विषयमा कार्यक्रम तयार पारी प्रस्तुत गर्नु भएको छ। यस उप्रान्त, गुवाहाटी महानगर तथा उत्तर-पूर्वांचलका प्राय: पत्र-पत्रिकामा एकजना स्वच्छ पत्रकार हिसावले उहाँले धैरै रचनाहरू लेख्नु भएको छ। उहाँले *वेली* र *Academy Review* को सम्पादन औ गुवाहाटीबाट प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक पत्रिका *The Newsfront* को कार्यकारी सम्पादकको हैसियतमा पनि सेवा गर्नु भएको थियो। उहाँले अहिलेसम्म विभिन्न भाषामा प्राय: 24 वटा भन्दा धैरै ग्रन्थ रचना गर्नुका साथै पचास भन्दा धैरै शोधपत्र औ रचना विभिन्न पत्र-पत्रिका, साप्ताहिक, सामयिक पत्रिका, स्मृति-ग्रन्थ इत्यादिमा प्रकाशमा आएका छन्।

Post Box No. 278
Ghy. G.P.O.
Guwahati-781001 (INDIA)

विधान सिंह

नेपाली अनुवाद

अनुराग प्रधान
नब सापकोटा
गोपाल बहादुर पौड्याल

हिन्दी अनुवाद

ड॰ शिवतोष दास
सत्यानन्द पाठक

इण्डिया कन्टीनेन्टेल, गुवाहाटी-1

लहर

विधान सिंहको नेपाली-विष्णुप्रिया मणिपुरी-हिन्दी
त्रि-भाषिक काव्य ग्रन्थ

प्रथम प्रकाश : 2.4.1999 (भारत संस्करण)

मूल्य
नें॰ रू॰ 80/-
भा॰ रू॰ 50/-

उपहार

खुत्तल
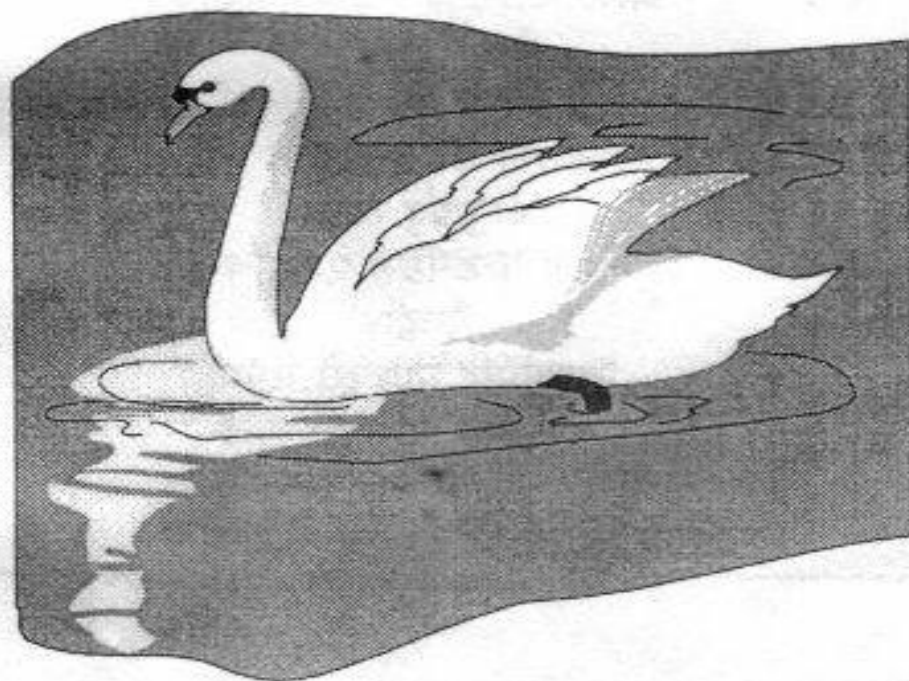
विधान सिंहको साहित्यकृति

प्रकाशित पुस्तकहरू

गुरू शिष्य चरितम (1.9.1987)

रवीन्द्रनाथ ठाकुरर कविता कतहान (8.5.1993)

A Brief History of Sri Sri Bhubaneswar Sadhu Thakore
(A great saint of North-East India) (8.5.1993)

निजरार पानी (14.1.1997)

वनवासी (2.4.1997)

चि'नर अरलेण्डो मेजट्टा (दिसेम्बर, 1997)

उत्तर-पूर्वाञ्चलर लोक संस्कृति (1999)

वुकु हम हम करे (2.4.1999)

पत्र-पत्रिकामा प्रकाशित पुस्तकहरू

बैझिर उम (नुवा एला, जोरहाट, 1982)

जीन-भालजीन (त्रिपुरा चे, आगरतला, 1984)

अभिशाप (बेली, शिलचर, 1985)

पण्डितर कौलि (त्रिपुरा चे, आगरतला, 1987)

ईमा बुलिया आकखुरूम मोरे डाक (नुवा एला, जोरहाट, 1987)

प्रकाशित हुन् पुस्तकहरू

Folk-Culture of North-East

Melodies of the Other Days

हाजी गोर्भादीन

देवयानी

झाहारनि डेंखौ-तुइब्रुनि तुई

अनुवाद समग्र

मनादा एन्ड हिज एडभेन्चर्स्

दैवद्वीप

विष्णुप्रिया मणिपुरी मेयेक

विष्णुप्रिया मणिपुरी पौरेई

पूर्वोत्तर की जन-संस्कृति

भारतीय जीवन दर्शन आरू पाश्चात्य संस्कृति
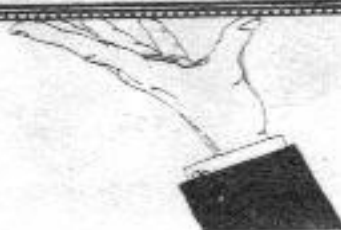
समर्पण

नेपाल नरेश श्री ५महाराजाधिराज
वीरेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव
र
भारत–नेपाल सुसम्बन्ध को लागि
समर्पित व्यक्तिहरूलाई

ग्रन्थकार

LOHOR

A Nepali-Bishnupriya Manipuri-Hindi tri-lingual poetry collections of Bidhan Sinha translated in Nepali by Anurag Pradhan, Naba Sapkota, Gopal Bahadur Paudyal and in Hindi by Dr. Shivatush Das, Satyanand Pathak from the original work *Banawasi* of the author; Published by India Continental. Price : Rs. 50/- (I.c) / Rs. 80/- (N.c).

ग्राफिक्स र कम्पिउटर अनुलिखन

उत्तम कुमार प्रधान

मुद्रण

प्रधान प्रिन्टर्स,

भरलुमुख, गुवाहाटी,

असम, भारत-781009

लहर् बारे केही शब्द

प्रस्तुत कविता संग्रह *लहर* भारतको उत्तर-पूर्वाञ्चल क्षेत्र अन्तर्गत मणिपुर, असम र त्रिपुराकी विष्णुप्रिया मणिपुरी भाषाका एकजना सशक्त कवि श्री विधान सिंहका मुक्तकहरूको संग्रह हो। यस संकलनमा उनका मुक्तकहरूको नेपाली अनुवाद साथै विष्णुप्रिया मणिपुरीको मूलरूप र हिन्दी अनुवाद पनि राखिएको छ, जसले कविता प्रेमीहरूलाई तीनैवटाको चखिलो स्वादले निश्चय पनि आकर्षित गर्नेछ

श्री विधान सिंह आफ्ना मुक्तकहरूमा वर्तमान समय, मानिस र उनका विभिन्न स्थिति र परिस्थितिलाई बड़ा रोचक र व्यंगार्थ रूपमा चित्रण गर्न सक्षम भएका छन्। यसै कारणले होला उनका कविता मुक्तकहरूको अनुवाद धेरैवटा भाषाहरूमा, जस्तै- असमीया, बंगाली, हिन्दी, अंग्रेजी, कारबी, संस्कृत, कक्बरक, बोडो, तेलेगु आदि भाषामा हुँदै नेपालीमा पनि हुन गएको छ।

लहर'का मुक्तकहरू आकारमा साना भए तापनि अतीव हृदय-स्पर्शी एंव गम्भीर अनुभव हुँदछन्। कविको विशाल भावना र विभिन्न जाति-धर्मप्रतिको श्रद्धाभाव उनको कविता *दिन-ई-इलाही* बाट स्पष्ट हुँदछ भने उनका विभिन्न मुक्तकमा मानवीय चेतना, वर्तमान समयको वास्तविकता र प्रगतिशील विचारधाराको संवाहकको रूपमा प्रकट हुँदछन्। उनका प्रत्येक मुक्तकले छुट्टै स्वाद र आनन्द दिंदै उनको काव्यशैलीको विशिष्टता स्पष्ट पार्दछन्। आशा छ, यस संकलनले हाम्रा काव्य प्रेमीहरूलाई पनि नयाँ स्वाद र रस दिनमा सफल हुनेछ र सबैद्वारा समादृत हुँनेछ।

म यस द्वारा कविको उत्तरोत्तर प्रगति र उन्नतिको कामना गर्दै भविष्यमा उनीबाट अझ राम्रा काव्यकृतिको आशा गर्दछु।

गोपाल बहादुर नेपाली पौड्याल
सदस्य, साहित्य अकादमी(1993-97), नयाँ दिल्ली

अनुभूति

एक अक्षर से ब्रम्हांड की कल्पना की गयी है। अक्षर-अक्षर मिलाकर जब शब्द बनते हैं तो उसकी सत्ता अपरिसीम हो जाती है। शब्दों का संयोजन ही कविता बनती है और कविता को भाव संप्रेषण का सबसे अच्छा माध्यम बताया गया है। कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा और गंभीर बातों को सहजता से व्यक्त कर देना कविता का स्वभाव है। कविताओं में भी आजकल छोटी-छोटी कविताओं का प्रचलन उनकी उपयोगिता की दृष्टि से काफी बढ़ गयी है। छोटी-छोटी कविताएं अपने ह्रदय में गंभीर बातें छिपाये रहती है। कहा भी है, 'देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर।'

श्री विधान सिंह की कविताओं का यह संग्रह छोटे-छोटे मगर अचूक तीरों का तरकश है। कविता सरिता का प्रवाह होती है। विधान सिंह की कविताओं में सरिता का प्रवाह है। यही कारण है कि कविताओं के अनुवाद भी उसी प्रवाह में हैं।

कविता किसी खास भाषा की चेरी नहीं होती। उसकी अपनी एक अलग ही भाषा होती है और जब वह किसी भी भाषा में आती है तो अपने भीतर के भाव को पूरी तरह व्यक्त करती दिखती है। विधान सिंह की कविताओं और अनुवाद इस कथ्य की पुष्टि करते हैं। कविताओं की शैली में कहीं कोई भिन्नता नहीं है। कवि ने सभी कविताओं में अपनी शैली को बांधे रखा है।

कविता की मुख्य बाते है शब्दों का संयोजन। सठीक शब्दों का प्रयोग। शब्दों का अटपटा प्रयोग कविता की आत्मा को मार देती है। इसलिए कविता में शब्दों का चयन और उनके सठीक प्रयोग पर खास ध्यान दिया जाता है। विधान सिंह कोमल अनुभूतियों के कवि हैं। उनकी प्रत्येक कविता से यह झलकता है कि उनकी दृष्टि किसी भी विषय के कितना तह में जाती है और उसे कितनी सहजता से व्यक्त करती है। यह सब कुछ कविताओं को पढ़ने से पता चलता है। आशा है, सुधी पाठक इन छोटी-छोटी मगर सागर सी गहराई वाली कविताओं का रसपान उसी एकाग्रता से करेगे, जिस एकाग्रता से ये लिखी गयी हैं।

सत्यानंद पाठक
कार्यकारी संपादक, पूर्वांचल प्रहरी,
जी.एस. रोड, उलूबाड़ी, गुवाहाटी-७

लहर

कविता

भित्तामा झुण्ड्याइएको फोटो
मुसा एउटाले काटी रहेछ,
तिमीले दिएको कमेजको
एउटा खल्ती नै छैन,
कारपेट ओच्छाएको बैठक कोठामा
साङ्लाहरूले राज गर्दैछन्,
म कवि कविताको।

कविता

बेरहानात टाडेछि फटकहान
उदूर आगै कापेर
ति देछिले आडेइहानर
जेप आग नेई,
कारपेट पारेछि ड्इंरुमग
तेलचुराहाने बुजेछि,
मि बेरया कविता अराउरि॥

कविता

दीवार पर लटकती तस्वीर
चूहे कुतर रहे थे
तुम्हारे दिए कमीज पर
एक जेब न था।
कालीन बिछे बैठक में
तिलचिट्टा का राज है।
मैं हूँ कवि
सोचूँ बहुत दूर की
जहाँ न पहुँचे रवि॥

लहर

मानिस

कसैले मलाई बोलाएको थियो
वर्खाको एक दिन
सुदूर अतीतमा
मैले सोधें, किन?
मानिस बन।।

मानुग

मोरे सात मातौहान कुङ्ग आगै डाकल
नंसाडैल आकदिन,
बरिषार प'रे
मि आंकईलु -
कियाथाङ ?
मानुग अ... ॥

मानव

न जाने आवाज दी किसने
वर्षा के एक दिन
सुदूर अतीत में
मैंने पूछा था,
क्यों?
मानव बनो॥

धूम्रपान

एउटा सुन्दर युवती चाहन्थी मलाई अत्यधिक
उसले भनिथी
तिमी सिगरेट पीऊ
राम्रो देखिनेछौ
मैले झट्ट भनेथें -
म धूम्रपान गर्दिन ॥

मि धुमपान नाकरौरि

निडल आगै मोरे ठिकपेइल'
आकदिन मातेछिली,
ति सिगारेट पि
जे चुनाइतेइ।
मि मातलु :
मि धूमपान नाकरौरि ॥

मैं नहीं पीता

रूपवती चाहती थी मुझे
एक बार उसने कहा था,
सिगरेट पीयो
आकर्षक लगेगा तुम्हें -
मैंने सकपकाकर कहा
धूम्रपान मैं नहीं करता ॥

समीकरण

दुई पन्छी
नीलो आकाश
रूखहरू
कुद्दै गरेका शिशुहरू
त्यो टाढाको गाउँ हाम्रो घर॥

समीकरन

पाहिया दुगपाक थापारतारा,
नीलुवा हाकहान
मारल-मारल विरुक
शौ खेलातारा
गोडे आमार घर॥

समीकरण

पंख खुले दो विहंग
नीले आकाश के संग
पंक्ति में घने वृक्षों की कतार
शिशु खेल रहे थे।
मेरा बसेरा सुदूर गांव में॥

हुकुम

सुदूर गजनीको राजगद्दीमा
एकदिन आसीन थिएँ।
त्यसबेला मेरो हुकुममा
पृथ्वी चल्थ्यो
त्यो स्थिति आज छैन
एउटा सूर्यास्तको दिन
सबै सुकेर बिलायो ॥

फरमान

गजनीर मसनदे
आकदिन राजत्व करेछिलू।
दिन औहान मोर फरमाने
पृथिमीहान निक्करेछिल।
औ हुनर एबाका नेइ,
आकदिन बेलुका
हाबिता टुन्डाईल ॥

फरमान

दूर गजनी के सिंहासन पर
एक दिन आसीन था।
उस दिन धरा पर
चलता था मेरा फरमान।
वह बात अब नहीं रही
सूर्यास्त के एक दिन
लीन हो गया वह गजनी आबाद ॥

लहर

नील नदीका छालाहरू

एक-एक गरी गन्दै थिएँ
होवाङ्हुका बालुवा कणहरू
मेरो भाग्यको गणित मिलाँउदै
नील नदीको छालले
परिहास गर्दै भन्यो
म फेरि-फेरि आँउछु ॥

कौहाङ

आकेइगी करे लेहेइलुता
हुवांहुर लेङौ,
मिराजहान मोवेइते।
नील नदर इथेइ
सारलेदे मातल,
मिते आहितौ तेतनेया ॥

नील नदी का ज्वार

एक-एक कर गिन रहा था
ह्वांगहो के बालूकण
मेरे भाग्य का गणित निकालने
नील नदी का ज्वार
परिहास कर कहता है
मैं आऊँगा, बार-बार ॥

लहर

उत्सवको दिन

ठूलो माछाले मतिर
अपलक नेत्रले हेरी रहेछ
चारैतिर कोइलीको कूहु–कूहु कण्ठस्वर
वसन्तको हावा लागी
मन उडिरहेछ
चातकले पनि मुख उठाई हेर्दैछ बारम्वार।।

गिन–तेइन–ता

ए'ग पारा चितलग चित्पाटि दिया
बेरया मोरे चेया आछे।
कोकिलर रहनहान
बसन्तर पौहान आनेर
नंकुपीग हांकै अया
गजेदे चेया आछे॥

मृत नदी का पानी

बहुत बड़ा चीतल अपलक
मेरी तरफ देख रहा था
कोयल की कूक,
बसंत की बयार बहती आयी
चातक मुंह उठा कर,
देख रहा है॥

लहर

नामकरण

बराकमा चारवटा सेतु बनिए
तर मेरो नाममा एउटै पनि राखिएन
पत्रिकाहरूमा अवश्य मेरो नाममा
एक–दुईवटा कविता छापिए
तापनि मित्र
बाटो एउटाको नाम
मेरो नाममा राख है।

नामकरण

वईराकहानर गजेदे चारिहान पुल अईलथाडौ
मोरेल आकहानौ नाङ नाथछि।
पतिकात मेराक–सेराके
मोर दुहान–आह्वान कविता निकालतारा
गिरिगिथानी, सुपनाईलेड
सड़क आगर नाङ
मोरेल थै॥

नामकरण

बराक पर चार पुल बन गये,
मेरे नाम पर एक का भी नामकरण नहीं हुआ।
पत्रिकाओं में मेरी नाम में
एक–दो कविताएं छपी हैं,
भाई, कम–से–कम
एक सड़क का नाम
मेरे नाम हो॥

लहर

जीवन

मलाई भनियो
जीवनलाई प्रेम गर
तर मात्र एक चोटि
तर म हेर्दैछु
नीलो आकाश
101 हजार बार ॥

चिनचिकिमिन्चिकि

मोरे मातानि अइलता
ठैग बानापानी,
हुद्दा आकखुरुम।
मि बिसाउरिता
इनचिकचिक हाकहान
101 हाजार खुरुम॥

बात नहीं करते

मुझसे कहा गया है
जीवन को प्यार करने के लिए -
सिर्फ एक बार,
मेरी आकांक्षा
खुला आकाश
101 हजार बार ॥

धरती रून्छ

धर्म भन्ने केही त थियो होला
त्यो छ पनि
जाति, वर्ण त भर्खरै बनेको
मानिस नामको जीव
मशिनको कुरा गर्छ
धरती रून्छिन् ॥

ठुनिंश्वा

धर्म वुलिल किहान आहान आछिल,
थाइतैसात ।
जाति वर्ण किता-काता एखुरुम नुकुलेछेता
टेइपाङ मानुवे
कलर ठार टटरतारा
पृथिमी इमाइ कादिरी ॥

पृथ्वी रोती है

धर्म नामक कुछ एक था
वह हो सकता है
जाति वर्ण तो अभि-अभि बना है
मनुष्य नाम का जीव
यंत्र की बात करता है
पृथ्वी रोती है ॥

संग्राम

इतिहास साक्षी छ
अर्को एउटा इतिहासको,
नाउँ : नेलसन मण्डेला
वर्ण : तिक्तता
जाति : मानवता
धर्म : संग्राम ॥

संग्राम

इतिहास साक्षी थाइतै
आराक आहान इतिहासर
नाङहान : नेलसन मेण्डेला
माचुहान : तितारा
जाति : मानवता
धर्म : संग्राम ॥

संग्राम

इतिहास गवाह रहेगा
एक और इतिहासका
नाम : नेलसन मंडेला
वर्ण : तिक्तता
जाति : मानवता
धर्म : संग्राम ॥

मरीचिका

दाँतहरू केही देखिए
दुईटा जुनकिरी
एउटा छायाँ
अँध्यारो रात
प्रेम गर्छे
अट्टाहास गर्दै हाँस्छे॥

केकुक

दातसुरि लिटकेछिंल,
जिनजिनि दुग,
छेया आग
मामछे रातिहान
ठारुवाली अर
पाक-पाकानि॥

मरीचिका

कुछ दाँत दिखे,
जुगनू की दो आख
एक छाया
अंधेरी रात
प्रेम करेगा
ही ही कर हंस रहे थे॥

लहर

दुराशा

मंगल ग्रहका आत्मीयबाट
एक बीघा माटो पाउने
खबर आएको छ
नाम दर्त्ता गर्नलाई,
पृथिवी अनावश्यक!

हेमेराक

मङ्गल ग्रहत साकेइ आग आछिल
पौ आहेछे
विघा आहान बि
नामजारि अइतै,
पृथिमी अपांक्तेय॥

अतिथि

मंगल ग्रह पर एक आत्मीय था
तार आया है
एक बीघा जमीन
मेरे नाम होगी
पृथ्वी असहनीय!

लहर

चरैवति

वृहस्पतिवार
मई महीनाको ५ तारीख
—संगै बसेका थियौ
अनर्गल पद बोल्दै छन
"भुवन पाहाड़ एउटा आकर्षक कविता"
निसंकोच
अघाडी बढ़ ॥

चरैवेति

मेर 5 तारिख, साकलसेल
कादाकादि बहेछिलाङ
कलिग, माहि मातल।
भुवनगै पुह्राप कविता आहान,
माभै:
चरैवेति ॥

प्रकाशछाया

5 मई, गुरूवार
करीब बैठे थे
अनर्गल पत कह गयी
भुवन पहाड़ ही एक आकर्षक कविता
माभै:
चरैवति ॥

हाम्रोकुरा

स्वर्ग र मर्त्य, माझमा पृथ्वी,
यो कुनै नयाँ कुरा होइन
दिन र रात, अँध्यारो र जुनेली
कुनै कसैको हुन्न
घाम बर्खा र आँधी
यी हुन मेरा सहपाठी॥

हमाजि

स्वर्ग वारौ मर्त्य, हमबुकुत पृथिमीहान
नुवा यारिहान सुपौ नागै
दिन बारो राति, माम बारो डल
कुङ्गौ कारका नागौ
रइत बौबरण बौचाल
तानु मोर हमाजि॥

मेरी बात

स्वर्ग और मर्त्य, बीच में पृथ्वी
नई कोई बात नहीं है।
दिन और रात, अंधेरा और चंद्रमा
कोई किसी का नहीं
रौद वर्षा तूफान
वे मेरे सहपाठी हैं॥

दीन-ई-इलाही

मेरा लाशमाथि सैकडौं मन्दिर बनेका छन्
स्वर्ग मेरो भारत देश
अयोध्याको राम मन्दिर
नेपालको पशुपतिनाथ,
सरनाथको बौद्ध विहार
अमृतसरको स्वर्ण मन्दिर
र मक्का शरिफ हुन् मेरा तीर्थस्थान।

दीन-ई-इलाही

मर मितागर गजे
आहौग मालठेप हडैल।
भारत नाडर देशहान.मोर स्वर्ग।
अयोध्यार राम मन्दिर,
सारनाथर बौद्धबिहार,
अमृतसरर स्वर्ण मन्दिर, बारो
मक्का शरिफ मोर लेइफाम॥

दीन-ई-इलाही

मेरे शव पर
एक सौ मंदिर बने
भारत नाम का देश मेरा स्वर्ग
अयोध्या के राम मंदिर
सारनाथ के बौद्धविहार
अमृतसर के स्वर्ण मंदिर और
मक्का शरीफ मेरा तीर्थक्षेत्र॥

अमानत

रूखको विरूवा एउटा
आजै रोप्नु पर्ने थियो
आंगनको तुलसीको बोट
शिवमंदिरको वरको बोट
या बाटो छेउका क्यासियस
मेरो निश्वास –
यी हाम्रा अमानत हैनन् र ?

श्यामलिमा

गाछ आकजारि
आजि रुवानि थकछिल।
लेइसाङगर तुलसीजार
माहादेव बाड़ीहानर खैनाङजार
बारो सड़कगर खांतार केसियास,
मोर निंश्वाहान
इयमकरेछिता नागै ?

श्यामलिमा

एक पेड़ के बीज को
आज ही बोना उचित था
आंगन के आखिर में तुलसी
शिवमंदिर का वह वट वृक्ष
अथवा रास्ते के नजदीक के कैसियस
मेरा निश्वास–फुसफुस
अमानत नहीं है क्या ?

लहर

विडम्बना

हलोको फालीको माटो
बीरेको छोराले मागिरहेछ
एक चिम्टी नुनका निम्ति
आमाले आफ्नो सन्तानलाई लत्याइदिन्छिन्
हाय के दिन!
झरीमा सबै रूझ्यौं ॥

कारेम

फालहानर माटिहानि
हारानर पुतके कारेम करेर
मालके नुन नेक्ति आहानरका
नाईगासर शौगरे थडदिलो
इलाक विलाक नेइ लपुकग
बरणे तिडिल्ल ॥

जल तरंग

हल के फल की मिट्टी
हाराण के लड़के का दावा था
एक चम्मच नमक के लिए बहु
कोंख के बेटे को लात मारी
बीच दरिया में मरणा सन्न होकर
वर्षा में भीगा था ॥

घिन लाग्छ

दुईमुखे मान्छेलाई म घिन गर्छु
घिनाउँछु प्रतारणा
विश्वासघातकताले मान्छेलाई
कुमान्छे बानाइदिन्छ
कृतघ्नतालाई म मान्दछु कापुरूषको अभिव्यक्ति ॥

लिचेत्

थतार खेलापीरे मि आलिपाउरि
आलिपाउरि प्रतारणा
विश्वासघातकता मानुरे
आमानु हडकरेर
कृतघ्नता फेइटार लिचेत् ॥

सत्कार

मैं दो मुहे मनुष्यों से घृणा करता हूं
घृणा करता हूं प्रतारणा,
विश्वासघातकता मनुष्य को अमानुष बनाता है।
कृतघ्नता को हम कापुरूष की
अभिव्यक्ति मानते हैं ॥

उच्चाशा

के मैले भनेथें
भुवन पाहाड नै सबभन्दा अग्लो छ ?
आँट नै छैन।
दोष जति अरू कै
नदीको बालुवा झैं ॥

मानसी

मि मातेछिलुथाङ
भुवनग नियामपारा उच् ?
हुनरते नेइ
शिवशम्भुर दोष
घाटर पारर लेडौ ॥

मानसी

मैने क्या कहा है
भुवन पहाड़ काफी उँचा है ?
आस्तीन मोड़ कर बैठा हुआ
शिवशम्भु का दोष
रूकनी का बालू का मैदान ॥

ब्रह्मपुत्र

हातमा दार्जीलिङे चियाको गिलास
वेलायती सुरा
वीर वलभद्र
मेरा अतिथि हुने छन्
सुन्दरीहरूले सजाएका छन्
ब्रह्मपुत्रको किनारमा भजन ॥

केदारनाथ

आतहानात पालइर चाहा खेरि,
बल्लाल सेनर सुरा,
राणा संग्राम सिंह
मोर आपरबीग
पालाउली हाजेछिला
पहरी पारगत कुमेइ बहेछे ॥

केदारनाथ

हाथों में एक प्याला पालई चाय
बल्लाल सेन की सुरा
राणा संग्राम सिंह
मेरे अतिथि होंगे
बंजारन सब सजी-धजी थी
तालाब के मोड़ पर कीर्तन है ॥

कोपिला

उनी मलाई देखी
मुसुक्क मस्केकी थिइन
फूल बुटे पहिरनमा।
रेक्सावालले हात
माथि उठायो
दामी सवारी॥

मंजुषा

निडल उगै मोरे चेया
सि करे मुकसी देछिली
मैरांफि इनाफिहान
रिक्सालाग आत आहान
तुलेछिल
नामी आरोहीग॥

मंजूषा

महिला मेरी ओर देखकर
मुस्करा रही थी,
फूल चित्रित चादर
रिक्साबाला एक हाथ
ऊपर उठाये था
नामी आरोही॥

सुरभि

मैले चाहेको थिएँ-
आमको बोट दुग्धवान भए
तुलसीको बोटमा दीयो जलाउने छु
त्यस दिन नीमको बोट मुन्तिर
त्यो कालो मानिस
के खोज्दै बसेको थियो ?
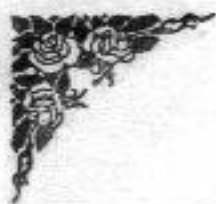
सुरभि

मि निडकरेछिलुताई
हेइनौजार एखुरुम सेलकम दितै,
तुलसी पुडग्गत पुजा लाडकरतौ,
निमजारिर तले
कालिरा माचुर मानु उग
कियाका बहेरता ?

सुरभि

मैंने चाहा था
आम का पेड़ इस बार दुग्धवती बने,
तुलसी के जड़ो में पूजा दूंगा
उस दिन नीम के नीचे
काला मनुष्य
क्या देख बैठा था ?

लहर

हुँदैन

दुङ्गामा फूल उम्रिन्न
नदी कहिलै उँभो बग्दैन
फुटेको ऐनामा दाग हुन्छ
झरेको फूल ओइलिएको हुन्छ
र बेमौसममा उम्रेको फूल
पूजामा चढाइन्न ॥

विकार

हिलरमा फुल ना शातर
घाटहानर लामुनि पानि उजेया नाहेर,
लिकलिर चिलेइ सुपैलेउ चिनत थार,
जडिया परेर फुलग सेंकरे ना शातर
बारो
बेपरे शातर फुल
पुजात ना लागेर ॥

साधना

पत्थर में फूल नहीं उगते
नदी के भाटी मे पानी नहीं बहता
टूटे कांच पर दाग होता है
टूटे फूल चिर निष्प्राण और
असमय मे खिले फूल
पूजा के योग्य नहीं होते ॥

मौका

त्यस दिन
साइरन बजेको थिएन
इन्द्रेहरूको आपसमा
खसाकखुसुक गर्दै थिए।
तीन छटाक महको दाम
आठ रूपियाँ पच्चीस पैसा॥

चिकन काला

हैदिन साइरेङग ना रहेछिल
इन्द्रनीलगासि इरि-इशाङ बाधेछिला
केइराक आहान-
तिन छटाक खहि
आट टेका पचिश पयसा॥

चिकन काला

उस दिन सायरन नहीं बजा
इंद्रनील लोग भी जल्दीबाजी
मचान पर उठे थे
तीन छंटाक मधुरेणु
आठ रूपया पच्चीस पैसा॥

ताजमहल

एउटा साँझ
रूक्री नदीमा
मेरो लाश बगाउदै
लगेको दृश्य देखेको थिंए,
बीचबाटैमा चिम्टे मुसोले
मेरो कालो लिएर गयो॥

ताजमहल

तिरि सेन्दात
रुकनीहानात मोर मिताग
काइहानात काकरते देखलु,
चिक्का उदुर आग
पथग थेतकरिया थाइल
खोकन नाडर शौगुलिये
मोर नामाबलीहान बेराछिल॥

ताजमहल

त्रि–संध्या
रुकनी नदी में
मेरा शव
बहते हुए देखा था,
नंगा चूहा बीच रास्ते में प्रणाम कर रहा है
खोकन नाम का लड़का
मेरी नामावली उठा ले गया॥

धूमकेतु

हेलीको धूमकेतुसरि
एक फेर आइथ्यौ
आज फेरि सप्तर्षि मण्डल
परिक्रमा गरी
अमरलोकमा जानेछ्यौ
म तिम्रो प्रतीक्षा गर्नेछु ॥

धूमकेतु

हेलिर दुमकेतुगर साने
मोर जीवने ति खांता आहेछिले
आजि सप्तर्षी मण्डल फारिदिया
द्युलोके सालछत
मि तोरका
बासेया थाइलु ॥

धूमकेतु

हैली की धूमकेतु की तरह
एक दिन आए थे तुम
आज सप्तर्षि मंडल
परिक्रमा कर
अमर लोक में लौट रहा है
मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में हूँ ॥

बुद्धम् शरणम् गच्छामी

चिनको पर्खालमा उभिएर
इजिमेण्डासका तलवारको झन्कार सुन्छु,
जसका बुलेटले गर्दा
बरकत र सुदेष्णाको छात्ती
जर्जर भएको थियो
आज म तिनीहरूको कारागारमा
कैद छु ॥

बुद्धं शरणं गच्छामि

चीनर प्राचीरगत उबाया
इजिमेन्दासर थाङजांहानर
झनझनानि हुनौरिता,
जेतार लंबेइत बरकत
बारो सुदेष्णा गासिर
बुकुगी करत करत अछिल
आजि मि तानुर कयेदीग ॥

बुद्धम् शरणम् गच्छामि

चीन की दीवार पर खड़ा होकर
इजीमेड्स के तलवार की झनझनाहट
सुन रहा हूं,
जिनके बुलेट से बरकत
और सुदेष्णा की
छाती छलनी हुई थी
आज मैं उनके कारागार में बंदी हूं ॥

दृष्टिकोण

बेला डुब्दै थियो
म नदीकटानको बाटो छेउ बसेको छु
मन्दिरमा घण्टा ध्वनि हुँदैछ
बाटा छेउका अमरबोटहरू
हावामा हल्लिँदैछन्
यहाँ पनि मैले वृक्षरोपण गर्नेछु ॥

कड़ठेक

बेलीहान हमानि बित्ताछिल
बेकीगर टूटिगत बहेछिलू
माहादेब बारीहानात धामाइल अर
सड़्कगर खांतार अमर गाछ
बैहाने हेइराप लरेर
मि एपेइ गाछ रुवेइतै ॥

अवलोकन

सूयास्त में कुछ पल बाकी था
बेकी के होंठों पर मै बैठा हूं
शिवबाड़ी में धामाइल चल रहा था,
सड़क के किनारे अमर पेड़ सब
हवा में हिल रहे थे,
यहां मैं वृक्षारोपण करूंगा ॥

मनालिसा

म चित्रकार हुन्थें भने
निक्खर चित्र आँक्रिथिएँ तिम्रो छविको
व्यस्त काली मन्दिर आज जनहीन छ
एउटा साँड बाटोकाटी जान्छ
एकान्तमा बसी तिम्रै कुरा सोचिरहेथें ॥

मनालिसा

मिरे हित्तुमेरे गनकग अइलूइछते
तोर फटकहान पाथापे थाइलइछ।
कालीबाड़ीहान इनचिकचिकछे,
माहादेबर बलडाग फेइतूप दिया गेलगा
मि तोरेइ निंशिङ अछिलू ॥

मोनालिसा

अगर मैं चित्रकार होता
तुम्हारा चित्र खाटी होता,
व्यस्ता काली मंदिर आज जनमानवहीन
एक सांढ़ नजदीक से गुजर गया
बैठे-बैठे तुम्हारी बात ही सोच रहा था॥

लहर

विषाद

रूकनी नदीको ठाउँ
केही बाङ्गो-टिङ्गो भएर गएको छ
एक दिन, अहिले म जहाँ बसेको छु
बाँधको काम हुँदै थियो
प्रबल बाढ आएको थियो॥

तरेङ

रुकनी हानर एरेपेइ
टूटिग निकुलेछे।
आकदिन, जेपेइ बहेछू,
माटि थमकरेछिलू
गोलाहान बपछिल॥

प्रदाह

यहां रूकनी नदी
कुछ टेढ़ी हुई है,
एक दिन, जहां बैठा हूं,
मिट्टी का काम किया था,
प्रबल बाढ़ आयी थी॥

पाठशाला

मलाई मन पर्नेहरूमा
तिमी एक हौ
तिम्रोमा म हुर्कें
आज तिमी छौ नदी गर्भमा
माथि राजपथ
तिमी मेरो बाल्यकालका
प्रिय पाठशाला ॥

पाठशाला

मि ठिकपाउरितारमा
ति आग,
तोरेल' डाडर अछु,
आजि ति डङररमा
गजेदे सड़कग
ति मोर हुरुकार
नुङशीपा इस्कूलग ॥

पाठशाला

मुझे अच्छा लगने वालों में
एक तुम हो,
तुममें मैं बड़ा हुआ हूं,
आज तुम नदी के गर्भ में हो-
ऊपर राजपथ
तुम मेरी बचपन की
प्रिय पाठशाला ॥

कालचक्र

भीषण दुर्दिनहरूमा
म साह्रै एक्लो हुन्छु, असहाय।
मान्छे पनि अप्ठ्यारा भए
पाले–प्रहरीले पनि धमास देखाउँदै
कड्केर सोध्छन् : मालिक कहाँ गए ?

पञ्चतन्त्र

साटूका दिन औतात
मि आकखुलाग,
मानू कहारा
दारोवानगै लौंदेर,
हेबानियाउगते कइते ?

काल बैशाखी

भीषण कड़कते दिनों में
मैं बहुत अकेला, असाहाय
लोग बड़े अजीब,
दरवान भी चिल्लाता है,
मुनीम कहां गया ?

अभिमन्यू

टुकी धिप्धिप गर्दैछ
भित्र सास रोकिँदैछ
नाभीमा किला ठोकेको छ
बालीका टुसा टल्किन्छन्
यायावरले धराप थापेका छन् ॥

अभिमन्यू

थंबेइहान पिलिक पिलिक
निंश्वाहान टूवछिल
थइतुग बाधेछि,
कामारी जिनारेइ
कूरुन्डीये फं बहाछि ॥

बेदुइन

मोमबत्ती खत्म हो गयी
निःश्वास भी शेष,
नाभि के नीचे आलपना अंकित
एक कांटी
बेदुइनों मे भागमभाग मची है ॥

उपलब्धि

बाटाछेउमा एउटा कुकुर
मरेको छ
घिन्ताङ घिन्ताङ भुर
आँप-नीमका पातहरू
रून्छन् करूणाले ॥

सड़कगर खांतात
मरा कुकुर आग
धिकिटि-धिकिटि थेइता
हेइनौरपाता निमपाता
हेकचेलया कादला ॥

बेताल

सड़क के किनारे एक कुत्ता
मृत पड़ा है,
धिकिधि-धिकिटि थेई ता
आम का पत्ता, नीम का पत्ता
फुस-फुस कर रो रहे थे ॥

देवदासी

तिम्रो कपालको परिचित सुगन्ध
हावाले चारै तिर फिंजाएको छ
देवदासीका झैं आँखा
तिम्रो प्रसन्नचित्त हृदय
समय पनि हाँसी रहेछ ॥

देबदासी

तोर चुलकातार नूङशीपा गतहान
बौहान गङालाछिल,
देबदासीग सानर
ङलङला आहिथम,
लुङशीपी,
खलकिया आहेछिले ॥

देवदासी

उस दिन तुम्हारे केश की सुगंध से
हवा भरी थी
देवदासी की तरह गोल-गोल दो आंखें
झक-झक कर रहे थे,
पुलकित हिया
खिलखिला कर हंस रहा था।

समयको महत्व

एउटा कोपिला दुइटा पात
घाम झल-मल्ल
परिश्रमी मानिस
बिडी पिउँदैछन्
समयको दुर्व्यबहार॥

बीरबल

चाहा बागिचार कडाला पाताय
रइतहान जिलिक-मिलिक
मेहनती मानु
बिड़ि पितारा
जिनजिनि धरताई॥

बीरबर

चाय बागान के कच्चे पत्तों में
धूप की झिलमिलाहट,
मेहनती लोग, झोपड़ियो में
बीड़ी पी रहे थे
जुगनू पकड़ेंगे॥

कार्तूज

मुसलधारे बर्खामा एकदिन
मज्जाले रूझेको थिएँ
आँखा रक्तस्थिर थिए
हात तत्पर थिए
जिब्रो फुस्केर बुलेट भयो ॥

कार्तुज

बौबरने आकदिन
कारीक पेलया हिनेइलु,
आहिथम माना-रकतग
आतहानि इयौचाछिल
थताहान केलया
वूलेट नुकुलिल ॥

कार्तूस

मूसलाधार बरसात में एक दिन
अंतर तर भींगा था
आखें रक्ताक्त
हाथ भी संग्रामी बने
मुहं खुलते ही बुलेट निकल गया ॥

लहर

जवाब

कृष्णा सागरका छालहरूमा
मसाल बल्यो
हिरण्यकशुपले ठूलो मुङ्ग्रोरो हातमा लिएर
माछा समात्न नुनीलो
पानीमा ओर्लें
रूगा लागेर भुतुक्क भ ॥

कलपुक

कृष्ण सागरर इथेइत
ज्वि लागेछिल।
हिरन्य कशिपु डाडर मुरा आगलो
माछ मारात पानाछे
नुनुवा पानित
काहानि थुडोछिल॥

जवाब

कृष्ण सागर के ज्वार में
मसाल जला था,
हिरण्यकश्यप बड़ा सुगदर हाथ में
मछली पकड़ने उतरा था
नमकीन पानी में
सर्दी में मुमूर्षू॥

देवयानी

सुन्दर चौबन्दी चोलो फरियामा
तिम्री आमाले पठाएकी थिइन
नयाँ दुलहीका भेषमा सजिएकी थियौ।
हलभित्र तिमी सुक-सुकाउँदै रोएकी थियौ
कुइनाले तिम्रो जीउ हठात
छोइए तापनि
तिमी छक्क परिनौ ॥

देवयानी

तोर मालके बेनारसी शाडिहान
पिदादिया सालकरेदेछिली,
नुवा कइनाग मालछिले।
टकीरमा ति हेकचेलया कादले
बेरया आकखुरुम
मोर कहनीग तोराङ तेडोछिल
ति ना उडोछिले॥

देवयानी

तुम्हारी मां ने बनारसी साड़ी पहनाया था,
सिनेमा देखने के लिए
तुम नववधू की तरह सजी थी
हॉल में
फुस-फुस कर रोती रही,
मेरी कोहनी ने तुम्हे छुआ था,
तुम चमक नहीं उठी ॥

सा-रे-गा-मा-पा

आज पनि सम्झन्छु
चयाउरिएका तिम्रा ओंठहरू
र मृग जस्तै दुई आँखाहरू
तिम्रा चुल्ठामा
फूलको वासनाले भरपुर ॥

ताइ-रित-ना-तोना

मि एबाकाड निंशिङ अउरि
टूवछिल तोर किसमिस अटगी
बारो अरिङ आहिथम
तोर जूड़ागर चुलकाता
हेइनौ फुलर साने नुडशी ॥

सा-रे-गा-मा-पा

आज भी याद आता है
तुम्हारे थके हुए किसमिस जैसे होंठ
और दो मृगनयन
तुम्हारे खोपा के केश
आम्रपुष्प के सुगंध से भरपूर ॥

घोलटाप्रे

झरीले भिजेको
रजनी गन्धाको कुरा
कसले पो सोच्छ र
वासी समय
कविता मेरी सहचरी ॥

हुचिका

तिङरा कुण्डलेइ
तुमि मोर यारि
नाङ नाटटराराइ
बेलुका
कविता मारुपी ॥

कैदखाना

बरसात में भींगी हुई रजनीगंधा
मेरी बात
तुममें से कोई तो नहीं बोलता,
संध्या बेला
कविता सहचरी ॥

नागरी

ग्रहणको त्यो दिन
तिमी आएकी थियौ
तिम्रो पछ्योरीले
मैले मुख पुछेको थिएँ
पृथिवीले बोलाउँदै छिन्।

परानधन

गरन धरेछिल दिन आहान
ति आहेछिले,
तोर निाफिहानात
मेइथंहान पुसेछिलु
पृथिमीये हांचेइरी॥

नागरी

कयामत के कठिन दिनों में
तुम आये थे,
तुम्हारे आँचल मे
एक शत आलपना अंकित किाय था
पृथ्वी मुझे चाहती है॥

लहर

दुर्योग

तेज तुफानमा
गृहहीन भयो डाँफे चरी
कर्म व्यस्त प्लेटफर्म
चिया दानीको शब्द
भंगेराहरू आहारमा मग्न
हावा निस्तब्ध ॥

लामचिक

बौबरने कुरुसुमइल
बाबुइ पाहियागर जमहान
प्लेटफर्मर आतिलपा लौ
चाहार ठन-ठनानि
चेरौ दुग माचाके मेइख्यु
बौहान इम्पानि ॥

तूफान

हवा के एक झटके में
बाबुई पक्षी गृहविहीन हो गया
प्लेटफार्म की कर्म व्यस्तता
चाय के केतली की ठक-ठक
दो मैना भोजन बीछने में मस्त
हवा मौन ॥

लकताक

हृदयका सयौं थोपा रगत
तिम्रो नाममा
तमसुक गरी दिउँला,
भित्ते घडीका काँटाले
मलाई बोलाई रहेछ ॥

लकताक

मोर आकेइ फुटा रकत
तोर नाडे
लात्करलु,
घड़िर काटाग
मोरे मातार ॥

लकताक

जीवन का एक-एक बिन्दु रक्त
तुम्हारे नाम से
विल कर दिया
दीवार घड़ी का कांटा
मुझे बुलाता है ॥

इन्द्रेणी

आकाश ताकेर
एउटा काँड हानेको थिएँ,
लक्ष्य भेद भयो।
चन्द्र ग्रहणको दिन
फूलकुमारीलाई अभिवादन॥

फेनधनुक

बेलीहान मापा करिया
कापदेछिलु,
लेइलेक नाछिल।
गरनर दिन
फुलकुमारीर अभियेक॥

इंद्रधनुष

सूर्य की तरफ ताकते हुए
निशाना बांधा था
फिसला नहीं
चंद्र ग्रहण के दिन
फूल कुमारी का अभिषेक॥

लहर

प्रतिमा

कांस्यको मूर्तिचाहिँ
ग्रीक देवीको हुनसक्छ,
कोणार्क वा अजन्ता इलोरामा
वनवासी मेरो
मानस प्रतिमा ॥

प्रतिमा

ब्रोञ्जँर निथर मुर्तिग
ग्रीक द्यो जेलाग अइतै
कोणारक नाइले अझन्ता इलोरात
बनबासी मोर
मानस प्रतिमा ॥

प्रतिमा

ब्रोंज की मूर्ति
ग्रीक देवी होंगे
कोणार्क अथवा अजंता एलोरा में
बनबासी मेरी
मानस प्रतिमा ॥

सृजना

वृक्षरोपन गर्नका निम्ति
तिमीलाई निमन्त्रण दिएको थिएँ
एउटा जीवनबाट
अझ नयाँ प्रजन्म शुरू हुनेछ
रूख मेरो प्राण॥

बालकृष्ण

तोरे गाछ आकजारि
रुवानिरका डाहेछिलु ;
जीवन आहानलो
नुवा टेइपाङ आहान हंकरिक
गाछजारित मोर ठैग॥

बालकृष्ण

तुम्हें एक पौधा को रोपने के लिए
आमंत्रित किया था,
एक जीवन से
नया प्रजन्म शुरू किया जाय
पेड़ ही हमारे प्राण हैं॥

शुभेच्छा

नव्य भारोतीय आर्य भाषा गोष्ठीको एउटा मीठो भाषा हो विष्णुप्रिया मणिपुरी, जो संगीत-कला प्रधान प्रदेश मणिपुरको आर्य हिन्दु गोष्ठीको मातृ भाषा हो। *वनबासी* यस भाषाको एउटा सुन्दर काव्य कृति हो। *लहर* त्यसैको नेपाली भाषान्तरण हो। यस भाषाबाट नेपालीमा अनुदित हुने पहिलो कृतिका रूपमा नाम दर्ता गर्ने यसैले सौभाग्य प्राप्त गरेको छ। यो अरू धेरै भाषामा यसरी नै अनुदित भइसकेको कृति हो। यसका रचयिता कवि विधान सिंह एक जना सूक्ष्म अनुभूतिका सरल कवि हुन्। *लहर*मा अनुदित कवितासित मूल कविता पनि हाराहारी राखिएकाले यस पुस्तकका नेपाली पाठकलाई विष्णुप्रिया मणिपुरी भाषाको काव्यिक स्वाद् पनि संगसंगै मिल्ने छ। जीवन-जगतका विभिन्न पक्षलाई सरल र सरस शैलीमा काव्यिक अभिव्यक्ति दिई आफ्नो हृदयको पाठकको हृदय तन्त्री स्पर्श गर्न कवि सफल भएका छन्। त्यसैले नै यी कविताहरूले धेरै भाषामा रूपान्तरित भएर यात्रा गरिरहेछन् विभिन्न भाषाका पाठकवर्गका हृदय-प्रान्तमा। कविता प्रेमी नेपाली पाठक हृदयले पनि निसन्देह यी मीठा मुक्तकहरूलाई खुशी साथ ग्रहण गर्नेछन्, यही कामना सहित,

माघे संक्रान्ति   **नवसापकोटा**

१५ जनुवरी/९९   सदस्य, नेपाली परामर्श परिषद,
साहित्य अकादमी, नयाँ दिल्ली
तथा कार्यकारी अध्यक्ष,
नेपाली साहित्य परिषद्, असम

रचना के बारे में

लहर काव्य कृति भाषायी आदान-प्रदान की दृष्टि से एक अभिनव प्रयोग है। इस प्रयोग से भारतीय भाषाओं के मध्य सेतु निर्माण की परंपरा को बल मिलेगा।

इस कृति के रचयिता श्री विधान सिंह एक प्रतिभावान कवि और प्रयोगधर्मी रचनाकार हैं। *लहर* कृति की 48 कविताएँ पहले *वनवासी* नामक कृति के रूप में विष्णुप्रिया मणिपुरी और बंगला भाषा में प्रकाशित हो चुकी हैं। *वनवासी* कृति में एक ही संवेदना को कवि ने दो भाषाओं विष्णुप्रिया मणिपुरी तथा बंगाला में व्यक्त किया है। *वनवासी* की रचनाओं का रूपांतरण असमिया, अंग्रेजी, संस्कृत,कार्वी, क़ाकबरक, बोडो और तेलुगू में हो चुका है।

वनवासी को अभिनव प्रयोग के साथ कवि विधान सिंह *लहर* के रूप में प्रस्तुत कर पूर्वोत्तर भारतकी विष्णुप्रिया मणिपुरी को देवनागरी में प्रस्तुत कर आंतर भारतीय की भावना को बढ़ावा दे रहे हैं।

मूल कविता विष्णुप्रिया मणिपुरी में रचित है जिसका लिप्यंतरण स्वयं कवि ने देवनागरी में किया है। नेपाली भाषा में नवसापकोटा, गोपाल बहादुर नेपाली तथा अनुराग प्रधान ने रूपांतरण किया है। हिन्दी रूपांतरण ड० शिवतोष दास एवं सत्यानंद पाठक ने किया है। मेरी जानकारी के अनुसार पूर्वोत्तर भारत ही नहीं बल्कि समस्त भारतीय भाषाओं में यह प्रथम प्रयोग है। प्रत्येक कविता के साथ जो चित्र दिया गया है वह कविता के बीज-भाव को व्यक्त करता है।

मैं *लहर* के सुखद भविष्य की कामना करता हूँ कि यह भारतीय भाषाओं को समृद्ध परंपरा प्रदान करेगी।

ड० हेमराज मीणा दिवाकर
केन्द्र प्रभारी,
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गुवाहाटी केन्द्र
गुवाहाट-781006